International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-3, Issue-1 February- 2016
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

पर्यावरण जागरूकता तथा पर्यावरण शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों के ज्ञान तथा अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

राकेश कुमार
शोधकर्ता
जे. जे. टी. यूनिवर्सिटी

डॉ.मनोज झाझडिया,प्राचार्य
शोधार्थी
कानोरिया बी. एड. कॉलेज, मुकुन्दगढ

मनुष्य को प्रकृति का पुत्र कहा जाता है। प्रकृति की गोद में ही वह बड़ा होता है। पर्यावरण अर्थात् वायु, जल, भोजन, पेड़–पौधे आदि मानव जीवन को स्वच्छ और सुखद बनाते है पर्यावरण के विभिन्न तत्वों के मध्य एक संतुलन का होना आवश्यक है। यदि मनुष्य प्रकृति के नियम को समझ कर प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग तथा उपभोग इस प्रकार से करता है कि प्राकृतिक संतुलन बना रहे, तब ही सृष्टि के द्वारा निर्मित पर्यावरण तथा मानव जाति स्वस्थ रह सकती है। भारतीय संस्कृति में इस अटल सत्य को आदिकाल से ही स्वीकार किया गया था। तथा भारतीय समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बनी रही।

पर्यावरण के तत्वों जैसे नदी, तालाब, पैड़–पौधे, वायु, धरातल तथा जीवों आदि को देवता मानकर उनका ध्यान रखा गया। यद्यपि साामन्य अवधारणा के अनुसार यह हिन्दुओं का धार्मिक पक्ष था। परंतु वस्तुतः मानव आचरण तथा अनुभूति को पर्यावरण से जोड़ने के लिए ऐसा किया गया होगा। धर्म के माध्यम से मानव जाति की अनेक शताब्दियों तक पर्यावरण के प्रति सजग रखा गया। यहीं कारण था कि उस समय पर्यावरण सबन्धी समस्यायें न्यूनतम थी तथा भारत को पर्यावरण की कोई विकट समस्या नहीं झेलनी पड़ी।

लेकिन आज प्रवृति मानव के लिए उतनी आनंददयीनी नहीं रही है अनियोजित मानवीय गतिविधियों के दुष्परिणाम स्वरूप प्राकृतिक असंतुलन और पर्यावरण प्रदुषण की उत्पत्ति होने लगी है, जो मानव जाति के अस्तिव के लिए भयावह बनती जा रही है। आज मानव इसके समाधान हेतू व्याकुल है। संभवतः प्रकृति के दुष्प्रकोप को भयावह कल्पना ने ही मानव को प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करने हेतू बाध्य कर रखा था। प्रसिद्ध दार्शनिक एवं शिक्षाविद् रूसों ने कहा था कि –'' प्रकृति की ओर लोटो'' अर्थात् शिक्षा की प्रकृति से सम्बद्ध होनी चाहिए। आइये इसके बारे में जानें की पर्यावरण क्या है? पर्यावरण' शब्द परि तथा आवरण से मिलकर बना है परि का अर्थ है चारों और तथा आवरण का अर्थ है ढका हुआ। अतः पर्यावरण शब्द से तात्पर्य उन सभी परिस्थितियों से है जो हमारें चारों और विद्यमान है पर्यावरण को वातावरण भी कहा जाता है। अंग्रेजी में पर्यावरण को Environment कहा जाता है। Environ का अर्थ है घेरना तथा Ment का अर्थ है चारों ओर से। इस प्रकार इसका अर्थ है चारों ओर से घेरना। Environment शब्द Envelop का भी पर्याय है जिसका अभिप्राय है Total Set of Surrondings.

मनव के विकास में वंशानुक्रम के साथ–साथ पर्यावरण भी विशेष महत्व रखता है व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने तो यहाँ तक माना है कि अच्छे पर्यावरण द्वारा बालक में बहुत परिवर्तन संभव है। पर्यावरण शब्द को शिक्षाशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों तथा पर्यावरणाविदों ने अने प्रकार से वर्णित किया है। कुछ का वर्णन निम्नलिखित है–

पर्यावरण विश्वकोष के अनुसार–''पर्यावरण के अन्तर्गत सभी दशाओ, संगठनो, प्रभावो को सम्मिलित किया जाता है। जो किसी जीव अथवा जाति के उद्भव विकास तथा मृत्यु को प्रभावित करते है।''

पार्क, सी.सी.के शब्दों में–''मनुष्य एक विशेष समय पर जिन सम्पूर्ण परिस्थितियों से घिरा हुआ है, उसे पर्यावरण कहा जाता है।''

एनास्तासी के शब्दों में–''वातावरण में वे सभी वस्तुऐं सम्मिलित है जो व्यक्ति के जीन्स के अतिरिक्त उसके सभी पक्षों को प्रभावित करती है।''

बेरिंग, लैगफील्ड तथा वेल्क के अनुसार–'' एक व्यक्ति के वातावरण के अतिरिक्त उन सभी उत्तेजनाओं का योग आ जाता है जिनकों वह जन्म से मृत्यु तक ग्रहरण करता है।''

उपर्युक्त वक्तव्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि पर्यावरण में अनेक तत्व व कारक सम्मिलित होते है। पर्यावरण का क्षैत्र असीमित है परन्तु पर्यावरण के विस्ताव विश्लेषण के द्वारा उसका सीमाकंन संभव है। पर्यावरण को प्राकृतिक व मानव निर्मित के दृष्टिकोण के आधार पर विभिन्न प्रकारों में सीमाकिंत किया जा सकता है। प्रकृति ने प्राकृतिक संसाधन

जैसे वायु, जल, भूमि, खनिज पदार्थ, पेड़–पौधे प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराए है परन्तु इस उपलब्धता को भी अपनी एक सीमा है। विगत कुछ दशकों में हुई जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकरण तथा विकास योजनाओं के फलस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का दोहन अत्यन्त तीव्रता से हुआ है। प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधूंध दोहन, अपव्यय पूर्ण उपभोग तथा अविवेकपूर्ण पर्यावरण उपेक्षा के कारण पर्यावरण समस्याएँ दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। प्रकृति की स्वनियामक (Self Regulation) क्षमता क्षीण होती गई जिससे मानव जीवन की गुणवता का ह्रास हुआ। पर्यावरण समस्याओं की गंभीरता के फलस्वरूप सभ्य समाज में एक नवीन चेतना जागृत हुइ। पर्यावरण संरक्षण तथा उसमें सुधार की महत्तों आवश्यकता की ओर जनमानस का ध्यान आकर्षित हुआ। पर्यावरण तथा जीवधराओं के बीच के संबंध को समझना आवश्यक प्रतीत होने लगा। पर्यावरण की रक्षा तथा उसमें सुधार एक ओर जहां पर्यावरणविदों के लिए एक चुनौती है। वहीं प्रदुषण निवारण के लिए आम जनता को पर्याप्त संरक्षण तथा उसमें सुधार की आवश्यकता के प्रति जागरूक बनाना भी आवश्यक है। पर्यावरण की समस्याओं के निराकरण तथा पर्यावरण सुधार की योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए अपेक्षित जन सहयोग प्राप्त करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि विगत कुछ समय से पर्यावरण शिक्षा के नवीन प्रत्यय पर जारे दिया जा रहा है। पर्यावरण शिक्षा वास्वत में मानव समाज के उत्थान तथा पतन की प्रतीक है।

पर्यावरण शिक्षा एक एसी प्रक्रिया है जो पर्यावरण के बारे में हमें जागृति, ज्ञान और समझ प्रदान करती है। इसके बारे में अनुकूल दृष्टिकोण का विकास करती है और इसके संरक्षण तथा सुधार की दिशा में हमें प्रतिबद्ध करती है। साथ ही मनुष्य और प्रकृति के बीच सहसंबंध की व्याख्या करती है। वैदिक और लौकिक संस्कृत साहित्य में ऋषियों, मुनियों व माता–पिता के पर्यावरण के प्रति श्रद्धा के ऐसे अनेक उदाहरण मिलते है जो भावी पीढ़ी को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण प्रेम का पाढ बाल्यावस्था से ही सिखा देते थे। और वे नवयुवक–युवतियाँ अपने आचरण में इसका बखुबी प्रयोग करते थे।

वर्तमान काल में पर्यावरण शिक्षा का इतिहास 19वीं शताब्दी से देखा जा सकता है। सन् 1899 में स्काटलैण्ड निवासी पैट्रिक गेडेंस ने एडिनबर्ग इग्लैण्ड में 'द आउट लुक टावर' नामक एक अनूठी संस्था की स्थापना की जिसका प्रमुख लक्ष्य पर्यावरण व शिक्षा में सुधार लाना था। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता का प्रमुख कारण पारिवारिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव है। प्राच्य शिक्षा व्यवस्था में बालक की शिक्षा का प्रांरभ संयुक्त परिवार में होता था जहां वह पारिवारिक संस्कारों से परिचित होता था। उसके पश्चात् आश्रम या पाठशाला से उसके संस्कारों का विकास एवं मानसिक अभिवृद्धि होती थी। और तत्पश्चात समाज से वह अपने अन्तर्संबंधो के कारण प्राप्त हुए अनुभवों से जीवन पर्यन्त सीखता था, जिसमें वह कहीं शिक्षक का दायित्व निभाता था।

आज बालक की प्रारंभिक शिक्षा का माध्यम परिवार के स्थान पर उसका पास–पड़ौस, चलचित्र, दुरदर्शन आदि हो गये है, जिसका स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है अभिनय से परिपूर्ण शिष्टाचार आश्रम शिक्षा के स्थान पर निर्मित विद्यालयों में आधुनिकता के नाम पर कुसंगति, अशिष्टता तथा अश्लीलता ही अधिक दिखाई देती है। शिक्षा का गिरता स्तर समाज की दुर्भावना, भ्रष्टाचार, आंतकवाद और ईर्ष्या से ओतप्रोत होने के कारण परिवर्तित हो चुका है। आज व्यवहार की परिभाषा बदल गई है। व्यवहार का अर्थ काम निकालना या काम करा लेने की क्षमता हो गया है।

पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि मनुष्य सम्पूर्ण प्रकृति चक्र के प्रति संवेदनशील बने, उसमें प्रकृति से लगाव उत्पन्न हो और पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति वह पहले से अधिक क्रियाशीलता बना समाज में मनुष्य अनेक समस्याओं जैसे जनसंख्या वृद्धि, गरीबी, निरक्षरता इत्यादि से घिरी हुआ है। जिन्हें उसका स्वंय की नासमझी और अकर्भव्यता ने भयावह बना दिया है। कारण चाहे जो भी हो प्रभावित प्रकृति हुई है और उसका परिणाम भोग रहा है मनुष्य। अतः आज के संदर्भ में पर्यावरण शिक्षा एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है।

ऐसे समय में छात्र की सामाजिक बुद्धि, व सामाजिक परिपक्वता उसके लिए सहायक सिद्ध होगी अन्यथा छात्रों में असंतोष एवं आक्रोश की मात्रा सामान्य से अधिक होगी। असंन्तोष से व्यावसायिक जड़ता उत्पन्न होती है। एक असन्तुष्ट छात्र अपना एवं समाज दोनो का अस्तित्व खो देता है। एक असन्तुष्ट छात्र अपनी रूचियों का समुचित बुद्धि व सामाजिक परिपक्वता तथा संवेगात्मक परिपक्वता का गुणात्मक विकास नहीं कर सकता। उनका मुख्य कारण व्यक्तिगत भिन्नता जिस पर व्यक्ति का व्यक्तित्व, कल्पना, तार्किक योग्यता संवेगात्मक स्थिरता एवं अस्थिरता मनोभाव मूल्य एवं आत्मसम्प्रंत्यय विचार समायोजन आदि हमेशा एक दुसरे से भिन्न होगा। यदि हम चाहे तो विद्यार्थियों की सम्पूर्ण मनौवैज्ञानिक योग्यता का अध्ययन एक शोध में संभव नही है। लेकिन कुछ चरों पर विचार करके काल्पनिक अवधरणाओं का वैज्ञानिक सत्यापन खोजा जा सकता है।

वर्तमान समय में विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी दिशारहित अभवाग्रस्त, लक्ष्यरहित, गतिविधियों में लिप्त रहते है। इससे बचने का एक ही उपाय है कि विद्यार्थियों के विचारों को सुधारने के साथ ही सकरात्मक भावनाओं एवं संवेदनाओं को उभारा जाये एवं उन्हें दैनिक व्यवहार में परिवर्तन हेतू अनुकूल बनाया जाए।
संवेगात्मक सामाजिकता का विकास का अर्थ उतेजनापूर्ण अवस्था से है जो व्यक्ति के शरीर एवं मस्तिष्क को अशांत और अस्थिर बना देती है। और जिसके परिणामस्वरूप वह किसी कार्य को करने के लिए उत्तेजित हो जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन का औचित्यः–

पर्यावरण की समस्या आज एक गांव नगर प्रदेश या देश की ही नहीं अपितु सारे संसार की है आज विश्व भर के पर्यावरण विशेषज्ञ, बुद्धिजीवि, राजनेता और सरकारे इस समस्या से जूझ रहे है और बिगड़ते हुए पर्यावरण की समस्या को सुलझाने का प्रया कर रहे है। इस समस्या को दो ही समाधान है और वे है जन–जन का पर्यावरण के विषय में जानकारी प्रदान कराना और मानव में नैतिक चेतना पैदा करना। पर्यावरण के विषय में जागरूकता के बिना उसे सुरक्षा प्रदान नही की जा सकती। पर्यावरण की बेहतरी कोई एक व्यक्ति या सरकार भी नहीं कर सकती। इसे बेहतर बनाने के लिए समस्त मानव समाज को अपनी जिम्मेदारी समझकर प्रयास करना होगा। मानव को पर्यावरण की जिम्मेदारी केवल पर्यावरण शिक्षा द्वारा ही समझायी जा सकती है।
इसके लिए भारत सरकार ने अपनेक पर्यावरण संबंधी कार्यक्रम शुरू किए है। पर्यावरण शिक्षा की व्यवस्था के प्रत्येक स्तर पर करने का प्रावधान किया है। आज विभिन्न विद्यालयों चाहें वे प्राथमिक स्तर के हो या उच्च स्तर के विभिन्न विश्वविद्यालयों चाहे वे नियमित हो या पत्राचार पर्यावरण को विषय के रूप में अथवा एच्छिक विषय के रूप में पढ़ाने का प्रावधान है। पर्यावरण शिक्षा का प्रारंभ विद्यालयों में छोटी कक्षा अर्थात् प्राथमिक स्तर से ही हो जाता है। वहां अध्यापक छात्रों को पर्यावरण के विषय में विभिन्न प्रकार का ज्ञान देते है उनका यही ज्ञान आगे चलकर विभिन्न माध्यमों से परिपक्व होता है इसमें अध्यापक की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसी को ध्यान में रखकर अनेक विश्वविद्यालयों में बी.एड में पढ़ने वाले छात्रों के लिए भी एच्छिक/ वैकल्पिक रूप में पर्यावरण शिक्षा का प्रावधान है वैसे भी पर्यावरण शिक्षा के महत्व को देखते हुए इसकों शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक आवश्यक घटक होना ही चाहिए। इसके परिणामस्वरूप आज अनेक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पर्यावरण शिक्षा को अक्सर शामिल किया जाता है। इसका प्रमुख कारण है कि पर्यावरण शिक्षा के अध्यापन के लिए जिन कुशलाताओं तथा योग्यताओं की आवश्यकता होती है वे परांपरागत विषयों की आवश्यकताओं से किचिंत भिन्न होती है। आज के छात्राध्यापक ही कल को पूर्णरूपेण अध्यापक बन कर शिक्षण कार्य करेगें। यदि उन्हें अपने पर्यावरण का सम्पूर्ण ज्ञान व जानकारी है तो वे उसका उचित ज्ञान उचित रूप से छात्रों को करा सकेंगे अन्यथा आधा अधुरा ज्ञान ही वितरित करेंगें। इसका प्रभाव छात्रों के अधिगम पर पड़ेगा। अतः प्रत्येक अध्यापक को अपने पर्यावरण की पर्याप्त जानकारी होना आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखकर शोधकर्ता द्वारा इस समस्या पर अनुसंधान करने की आवश्यकता महसूस की गई कि छात्राध्यापकों को अपने पर्यावरण शिक्षा के प्रति कितना ज्ञान है? वे अपने पर्यावरण के प्रति कितने जागरूक है? पर्यावरण शिक्षा के प्रति उनकी अभिवृति अथवा दृष्टिकोण क्या है? क्या वे इसे एक आवश्यक विषय समझते है अथवा नहीं। एसी अनेक बातों को दृष्टिगत रखते हुए शोधकत्री/ शोधकर्ता ने पर्यावरण पर कार्य करना उचित समझा।

संबंधित साहित्य का अध्ययन–

1. कौर, हरजीत पाल, 1992–'' जनसंख्या जागरूकता के संबंध में पर्यावरण शिक्षा और जनंसख्या शिक्षा के प्रति प्रोफेशनल अध्यापको की अभिवृति का अध्ययन।''
   समस्याः– जनंसख्या जागरूकता के संबंध का प्रोफेशनल स्त्री तथा पुरूष अध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा तथा जनंसख्या शिक्षा के प्रति अभिवृति ज्ञात करना।

उद्देश्यः–

1. विभिन्न प्रकार के अध्यापकां का जो जनंसख्या जागरूकता के विभिन्न स्तर पर है उनकी पर्यावरण शिक्षा तथा जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृति की तुलना करना।
2. विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर विभिन्न स्त्री एवं पुरूष अध्यापकों का पर्यावरण शिक्षा तथा जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृति की तुलना करना।

निष्कर्ष:–

1. शिक्षकों के विभिन्न वर्गो में स्त्री और पुरूष के संबंध में जनंसख्या जागरूकता में कोई अन्तर नही है।
2. जनसंख्या जागरूकता के प्रति शिक्षकों के विभिन्न वर्गो में लिंग का अंतर है।
3. जनसंख्या जागरूकता के स्तर का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृति से कोई संबंध नही है।

2. वत्स, ज्योति (2000) –'' प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकां को पर्यावरण अध्ययन के प्रति संवेदनशीलता का अध्ययन।''

समस्या

इस अध्ययन के द्वारा प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों पर्यावरण के अध्ययन के प्रति संवदेनशीलता का अध्ययन किया जाएगा।

उद्देश्य

1. शिक्षकों का पर्यावरण अध्ययन के प्रति प्रत्यक्षीकरण तथा उस प्रत्यक्षीकरण का उनके शिक्षण में प्रत्यारोपण करना।
2. शिक्षकों द्वारा पर्यावरण शिक्षा (EVS) के शिक्षण की प्रभाविता मे आने वाली समस्याओं को केन्द्रित करना।

निष्कर्ष:–

अध्ययन के निष्कर्षो द्वारा यह पाया गया कि EVS के प्रति शिक्षकों की समझ है। उनका प्रत्यक्षीकरण केवल विज्ञान विषय की तरह है और सामाजिक अध्ययन को पूर्ण रूप से अलग विषय मानते है। अन्तरानुशासन उपागम की सैद्धान्तिक समझ की शिक्षकों में कमी है। वे नवीन प्रवृतियों के प्रयोग की उपेक्षा करते है। वे समय के सदुपयोग के लिए शिक्षण सामग्री अथवा सहायक सामग्री की उपेक्षा करते है। अध्ययन के द्वारा शिक्षकों के सम्मुख आने वाली समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया। लंबी औपचारिक प्रक्रिया के कारण उन्हें पर्यावरण अध्ययन किट प्राप्त करने तथा पुस्तकालय से पुस्तके प्राप्त करने में अधिक समय लग जाता है।

3. प्रेहराज, बी. (1991)–'' पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरणीय अभिवृत्ति तथा सेवापूर्ण व सैकेण्डरी स्कूलों में कार्यरत अध्यापकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण।''

निष्कर्ष:–

1. सेवापूर्व अध्यापकों में पर्यावरणीय ज्ञान का स्तर निम्न पाया गया जबकि संम्प्रत्ययात्मक ज्ञान ठीक–ठाक पाया गया।
2. सेवा में अध्यपकों में भी पर्यावरणीय ज्ञान का स्तर निम्न पाया गया।
3. दोनों समूह अपने पर्यावरण के ज्ञान के स्तर पर सार्थक अन्तर लिए हुए है। पर्यावरण शिक्षा की अभिवृत्ति स्तर सेवा पूर्व अध्यापकों की अभिवृत्ति से उच्च पाया गया।
4. पर्यावरणीय ज्ञान और पर्यावरणीय अभिवृत्ति में सामान्य सह–संबंध पाया गया।
5. अध्यापक पर्यावरण शिक्षा को सामाजिक विज्ञान और सामान्य विज्ञान के कोर भाग के रूप में देखते है।

समस्या कथन

'पर्यावरण जागरूकता तथा पर्यावरण शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों के ज्ञान तथा अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध प्रबंध के उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. पर्यावरण विषय अध्ययन करने वाले तथा अध्ययन नहीं करने वाले छात्राध्यापकों के पर्यावरणीय ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन।
2. पर्यावरण विषय अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले छात्राध्यपकों की पर्यावरणीय जागरूकता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
3. पर्यावरण विषय अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

1. पर्यावरण विषय का अध्ययन करने वाले छात्राध्यापकों के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर में कोई अन्तर नहीं है।
2. पर्यावरण विषय अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले छात्राध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।
3. पर्यावरण विषय अध्ययन करने वाले तथा नहीं करने वाले छात्राध्यपकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

तालिका–1

टी–परीक्षण तालिका

प्रतिदर्श	n	M	S.D	D	6D	T	सार्थकता स्तर
पर्यावरण विषय पढ़ने वाले	70	22.40	9.18				
पर्यावरण विषय न पढ़ने वाले	50	21.38	11.76	1.02	1.98	0.515	असार्थकता

तालिका–2

2×3 आयात तालिका

	पंक्तियां	अभिवृत्ति			योग
		सहमत	असहमत	तटस्थ	
पर्यावरण विषय अध्ययन करने वाले	Fo Fe Fo-Fe $(Fo-Fe)^2$ $[Fo-F2]^2$ Fe	42.0 40.84 1.16 1.34 0.03	18.0 16.34 1.66 2.75 0.16	10.0 12.83 −2.83 8.00 0.62	70
पर्यावरण अध्ययन न करने वाले	Fo Fe Fo-Fe $(Fo-Fe)^2$ $[Fo-Fe]^2$ Fe	28 29.16 −1.16 1.34 0.04	10 11.66 −1.66 2.75 0.23	12 9.16 2.84 8.06 0.87	50
योग		70	28	22	120

तालिका–3

2×3 आयात तालिका

	पंक्तियां	अभिवृत्ति			योग
		सहमत	असहमत	तटस्थ	
पर्यावरण विषय अध्ययन करने वाले	Fo Fe Fo-Fe $(Fo-Fe)^2$ $[Fo-F2]^2$ Fe	35 29.2 5.8 33.64 1.15	25 26.25 −1.25 1.56 0.05	10 14.58 −4.58 20.97 1.43	70
पर्यावरण अध्ययन न	Fo	15	20	15	50

करने वाले	Fe Fo-Fe $(Fo-Fe)^2$ $[Fo-Fe]^2$ Fe	20.8 −5.8 33.64 1.61	18.75 1.25 1.56 0.08	10.42 4.58 20.97 2.01	
योग		50	45	25	120

निष्कर्षः–

पर्यावरण हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पर्यावरण के बिना जीवन की सकंल्पना निर्मल है। मानव हो या जीव सभी पर्यावरण पर आश्रित है। पर्यावरण ने हमे जीने के आधार जल, भूमि, वायु आदि उपलब्ध कराए है परन्तु प्रकृति के अनमोल उपहार का मनुष्य अपनी असीमित आवश्यकताओं की प्राप्ति के कारण दोहन करने में लगा है इससे अनेको पर्यावरणीय समस्याओं का उदय हो रहा है। इन समस्याओं से निजात पाने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य इनका दोहन बंद कर पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए विभिन्न दशाओं में शिक्षा में पर्यावरण पाठ्यक्रम को स्थान दिया है। पर्यावरण शिक्षा की आज महत्ती आवश्यकता है इसी का निरूपण प्रथम अध्याय में किया गया है।